वर्ष-१३ अंक-१०
२७ जून २०१७

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल 32/2015-17
एक प्रति- २०.०० रु.

ओ३म्

वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

ऋग्वेद

यजुर्वेद

सामवेद

अथर्ववेद

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

एक दृष्टि में आर्य समाज

- आर्य समाज की मान्यता का आधार सत्य सनातन वैदिक धर्म है।
- सनातन वह है जो सदा से था, सदा रहेगा। सत्य सनातन धर्म का आधार वेद है।
- वेद ज्ञान का मूल परमात्मा है।
- यही सृष्टि के प्रारंभ का सबसे पहला ज्ञान, पहली संस्कृति और समस्त सत्य विद्याओं से पूर्ण है।
- वेद ज्ञान किसी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय या किसी महापुरुष के ज्ञान के अनुसार नहीं है और न ही किसी समय व स्थान की सीमा में बन्धा है।
- परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद समस्त प्राणियों के लिए और सदा के लिए हैं।
- इसे पढ़ना-पढ़ाना श्रेष्ठ (आर्य) जनों का परम धर्म है।
- ईश्वर को सभी मानते हैं इसलिए विश्व शान्ति इसी ईश्वरीय ज्ञान वेद से संभव है।
- आर्य समाज-अविद्या, कुरीतियों, पाखण्ड व जाति प्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाला तथा सत्य ज्ञान व सनातन संस्कृति का प्रचारक है।

ओ३म्
वैदिक-रवि
मासिक

वर्ष-१३ **अंक-१०**

२७ जून २०१७
(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)
सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३११६
विक्रम संवत् २०७४
दयानन्दाब्द १८४

सलाहकार मण्डल
राजेन्द्र व्यास
पं.रामलाल शास्त्री 'विद्या भास्कर'
डॉ. रामलाल प्रजापति
वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक
श्री इन्द्रप्रकाश गांधी
कार्या.फोन: ०७५५ ४२२०५४९

सम्पादक
प्रकाश आर्य
फोन: ०७३२४२२६५६६

सह-सपादक
मुकेश कुमार यादव
फोन: ९८२६१८३०९५

सदस्यता
एक प्रति- २०-०० रू.
वार्षिक-२००-०० रू.
आजीवन-१०००-०० रू.

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ २ एवं ३	५०० रू.
पूर्ण पृष्ठ (अंदर)	-४००रू
आधा पृष्ठ (अंदर का)	२५० रू.
चौथाई पृष्ठ	१५० रु

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ
१.	पवित्रता ही जीवन की सार्थकता	४
२.	कायमगंज में पादरियों से शास्त्रार्थ	६
३.	महिमा आर्य समाज की	७
४.	वेद में लिखा 'एक है ईश्वर	८
५.	ज्ञान विज्ञान की खोज और भारतीय विज्ञान	९
६.	सकारात्मक सोच की विजय	११
७.	उपासना किसकी	१३
८.	वेदों में विज्ञान संकेत	१६
९.	क्यों है आदमी परेशान	१७
१०.	वेद सुधा	२०
११.	सूचना	२२
१२.	अंतर्वेलिया भवन सभा को हस्तांतरित	२४
१३.	आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों	२६

जुलाई माह के पर्व त्यौहार एवं जयंती

- डॉक्टर्स एवंसी.ए. दिवस १
- श्यामाप्रसाद मुखर्जी जयंती ६
- गुरू पूर्णिमा व्यास पूर्णिमा ९
- विश्व जनसंख्या दिवस ११
- गुरू हरिकिशन जयंती १८
- हरियाली अमावस्या, चन्द्रशेखर आजाद, बालगंगाधर तिलक जयंती २३
- हरियाली तीज २६
- डॉ ए.पी. जे.अब्दुल कलाम पुण्यतिथि २७
- गोस्वामी तुलसीदास जयंती ३०
- मुंशी प्रेमचंद जयंती ३१

सम्पादकीय :

पवित्रता ही जीवन की सार्थकता

संसार की किसी भी वस्तु का सही उपयोग उसकी पवित्र स्थिति से ही होता है।

एक स्वस्थ मस्तिष्क का व्यक्ति अपने बाहरी जीवन में किसी भी प्रकार की गन्दगी पसन्द नहीं करता, स्वच्छता ही उसको अच्छी लगती है। पहनने के कपड़े, ओढ़ने–बिछाने के बिस्तर, खाने, पीने, बैठने का स्थान, रहने का मकान आदि–आदि सबमें स्वच्छता चाहता है, यदि इनमें गन्दगी हो जावे अशुद्धता आ जावे तो उन्हें दूर करने का प्रयास करता है।

बाहरी शुद्धता और सुन्दरता बढ़ाने में वह कोई कसर नहीं छोड़ता यथा सामर्थ्य प्रयास करता है। अच्छा है ऐसा होना कोई बुरा नहीं है, स्वच्छता मन को प्रसन्न और सुख की अनुभूति कराती है। किसी गन्दे, बदबूदार स्थान से नाक पकड़कर, स्वांस रोककर निकलकर जाना हो, किसी मैले दुर्गन्ध से भरे, बिना नहाए, दाढ़ी बढ़ी हो, बाल अस्त व्यस्त हों, व्यक्ति के पास कभी मजबूरी में बैठने का मौका आ जावे या खाने के सामान पर ढेरों मक्खियों, मच्छरों को देख लेवें तो ? उपरोक्त सभी परिस्थितियां आपको कष्टदायक होगीं। इसके विपरीत किसी फूलों के बाग के पास से जाना हो, यात्रा में आपके पास वाली सीट पर स्वच्छ कपड़े पहिने, इत्र लगाया व्यक्ति बैठा हो, खाने का समान जो आप प्राप्त करना चाहते हैं वह स्वच्छ पात्रों में ढ़ंका हुआ और स्वच्छ स्थान पर रखा हो। निश्चित रूप से आपको यह स्थिति आपके अनुकूल लगेगी और सुखद होगी। कुछ हद तक स्वच्छता व्यक्तित्व के निखार में सहयोगी होती है वह अपने को तो सुख पहुंचाती है वहीं दूसरों को दुःख भी उचित लगती है। यह हमारे शरीर से संबंध रखने वाली बातें हैं जिनको भौतिक साधनों से संवारा जा सकता है।

सोना चॉदी, हीरा, जवाहरात या अन्य सामग्री लोहा, ताम्बा, पीतल आदि–आदि यह हमें भू गर्भ से प्राप्त होती है। जिस रूप में वह हमें प्राकृति में प्राप्त होती है, वह सीधे–सीधे हमारे उपयोग के योग्य नहीं होती हैं उन्हें विभिन्न प्रकार की प्रक्रियाओं से शुद्ध करना होता है, तब वह हमारे प्रयोजन की हो पाती है।

इसके होने न होने का बहुत बड़ा जीव प्रभाव नहीं होगा। किन्तु आंतरिक स्थिति जो महत्वपूर्ण है उसके लिए क्या ?

ठीक यही स्थिति इस मानव जीवन की है। मानव योनी पाकर इसे भी शुद्ध पवित्र रखना आवश्यकह, इसकी पवित्रता ही जीवन सुगन्ध है। जीवन सफलता है।

अन्तःकरण ही मनुष्य जीवन का सर्वोत्तम सोपान है यही जीवन की धारा निश्चित करता है उत्थान, पतन, सुख–दुःख, मित्रता, द्वेषता, पाप–पुण्य और तो और हमारी योनियों का निर्धारण भी यही करना है।

किन्तु दुर्भाग्य है इस अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य को हम महत्व नहीं दे रहे हैं। शायद इसलिए कि हमने जीवन के यथार्त स्वरूप को पहचाना ही नहीं, जो बहुमूल्य था, जो स्वामी है, सदा रहने वाला है, उसे साधारण सा स्थान भी नहीं दिया, और जो नष्ट होने वाला है, एक सा नहीं रहने वाला है उसको ही पूरा–पूरा महत्व दिया।

जीवात्मा जो जीवन की सबकुछ है, उसकी उपेक्षा जीवन की सबसे बड़ी भूल है।

आत्मा की पवित्रता और उसका ज्ञान से युक्त होना ही इस जीवन की सार्थकता है। इसके लिए भौतिक साधनों की आवश्यकता नहीं यह मन, बुद्धि से सुविचारों से, साधन से, ज्ञानमय जीवन से संभव है। आत्मा की पवित्रता, विद्या (ज्ञान) और तप से संभव है। इसके लिए शुभ संकल्पों वाला मन चाहिए।

सत्याचरण, धौर्यता, नियन्त्रण, परमार्थ, ईश्वर सानिध्य आदि मनरूपी वस्त्र पर से मैलापन दूर करने के साधन है। यही जीवन का सच्चा सुख, सन्तोष, आनन्द प्रदान कर सकता है। जीवन सुकुन का हो सकता है, यही तो जीवन की सफलता है।

परन्तु हम परमात्मा की अनमोल सुखकार अत्यन्त रमणिय आनन्ददायक कृति मानव जीवन के सच्चे लाभ से दूर है।

इसलिए एक सनातन धर्मी जब ब्रह्म यज्ञ अर्थात संध्या करता है तो प्रभु से वरदान मांगते हुए।

अपनी ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों को पवित्र व यशस्वी बनाने की कामना करता है। मन्त्र में बोला जाता है भुः पुनःतु शिरसि.....।

यह क्यों कहा इसका क्या महत्व है, इससे क्या लाभ है, यह जानना और मानना आवश्यक है।

अशुद्धि कोई भी स्वस्थ मस्तिष्क का व्यक्ति पसन्द नहीं करता, खाने–पीने, पहनने, रहने आदि सभी के संबंध में वह शुद्धता चाहता है, जानबूझकर वह इनमें से किसी भी वस्तु को अशुद्ध रूप में स्वीकार नहीं करता।

अविद्या का नाश व विद्या की उन्नति करनी चाहिए।

– आर्य समाज

महर्षि दयानन्द सरस्वती –

कायमगंज में पादरियों से शास्त्रार्थ

हम पीछे भी विद्वान बन्धु श्री डॉ. कुशलदेव जी के इस कथन का सप्रमाण प्रतिवाद कर चुके हैं कि ऋषि जी ने प्रयाग में पादरी नीलकण्ठ से वार्तालाप के पश्चात् बाईबिल का अध्ययन किया। पादरी नीलकण्ठ से तो महाराज का मिलन सन् 1974 में हुआ। इससे पूर्व स्वामी जी कई बार पादरियों से शास्त्रार्थ कर चुके थे। विक्रम संवत् 1925 में स्वामी जी महाराज के साथ शास्त्रार्थ करने के लिए अनलन पादरी कई गोरे व देशी ईसाइयों को साथ लेकर कायमगंज में उनके डेरे पर आये।

वे आकर उद्यान की ऊँची डौल पर बैठ गये। स्वामीजी का आसन उनसे नीचा था। लोगों को यह बुरा लगा। वे उन्हें उठाने लगे तो शिष्टता विनम्रता की मूर्ति श्री स्वामीजी ने झट से ऐसा करने से रोकते हुए कहा – "बहुत से पक्षी भी तो ऊपर पेड़ों पर बैठे हैं।"

पादरियों ने प्रश्न किया – "हम जो पापी हैं हमारे पाप क्षमा कैसे होंगे ?"

स्वामी जी ने संस्कृत में उत्तर दिया – पं. मोहनलाल ने उसका अनुवाद करके सुना दिया – "पाप क्षमा नहीं हो सकते।"

बात वास्तव में यह है कि सब मत–पन्त पाप क्षमा करवाने का ढ़ोल पीटते हैं। पापों से बचने की शिक्षा पर बल नहीं दिया जाता। वैदिक धर्म यह मानता है।

"बोया हुआ बीज तथा किया गया कर्म कभी निष्फल नहीं जाता।"

यह मार्ग कठिन है सो लोग पगडण्डी खोजते रहते हैं।

धर्म ही मानवता की पहचान –

आहारनिन्द्रा भय मैथुनं च
सामान्य मेतद् पशु भिर्नराणाम्
धर्मो ही तेषामधिको विशेषो
धर्मेण हीना पशुभिर्समाना ।। मनु

खाना, पीना, भय, परिवार वृद्धि यह सब मनुष्यों और पषुओं में भी समान रूप से पायी जाती है। किन्तु धर्म ही दोनों के मध्य का अन्तर है बिना धर्माचरण के मनुष्य पषु समान है।

महिमा आर्य समाज की

आज बताता हूं मैं तुमको महिमा आर्य समाज की।
पावन पुण्य पताका है दयानन्द ऋषिराज की।।

1. इस्लामी, अंग्रेजी झंझावातों से जब भारत जूझ रहा।
ले ईश्वर का नाम मूर्खता वश पत्थर को पूज रहा।।
कैसे रहूं किधर को जाऊँ, नहीं किसी को सूझ रहा।
पढ़ालिखा जाकर अनपढ़ से निज भविष्य को बूझ रहा।।
– हुई अपार दया ऐसे में स्वामीजी महाराज की .....पावन पुण्य पताका.....

2. गहन विचार किया ऋषिवर ने इस अनर्थ की मूल कहॉ ?
विश्व–गुरू भारत कर बैठा महाभयंकर भूल कहॉ ??
भूमण्डल सम्राट बन गया गैरों की पग धूल यहॉ।
सत्य धर्म और सदाचार की परिभाषा प्रतिकूल यहां।।।
– घोर अविद्या पराधीनता बात कोढ़ में खाज की.....पावन पुण्य पताका.....

3. देखा ऋषि ने वेद हीनता दुर्गतियों का कारण है।
शिक्षित और सुधारक जन भी शासक का ही चारण है।।
भारत के इन अध रोगों का करना मुझे निवारण है।
तपः साधना द्वारा करके दिव्य तेज को धारण है।।
– ऋषिवर ने धज्जियां उड़ा दीं हर एक बुरे रिवाज की....पावन पुण्य पताका..

4. सर्व जयी योद्धा बनकर सब जीवन भर संग्राम किया।
चिन्तन–धारा में परिवर्तन लाने वाला काम किया।।
प्रबल प्रवाह पतन पथ पर था पुरूषार्थ से थाम लिया।
वैचारिक संक्रान्ति ने ही स्वतन्त्रता परिणाम दिया।।
– ऋषिवर से ही हमें मिली थी परिकल्पना स्वराज की...पावन पुण्य पताका....

5. जग के पूर्ण उपकार हेतु, प्यारे ऋषि का आह्वान है।
दयानन्द के दिव्य ध्येय की पूर्ति का अभियान है ये।।
श्रद्धा तर्क समन्वय वाला वेद धर्म–विज्ञान है ये।
सत्य कहें तो मानवता को ईश्वर का वरदान है ये।।
– रक्षक है "गुणग्राहक" ये तो इस भारत के लाज की....पावन पुण्य पताका..

– रामनिवास "गुणग्राहक"

वेद में लिखा 'एक है ईश्वर'

वेद में लिखा 'एक है ईश्वर'
सुन ले ओ नादान
नहीं दो, चार, दस हैं भगवान।
दुनिया ने तुझको भरमाया
उल्टा सीधा मार्ग दिखाया।
यहां–वहॉ कहॉ–कहॉ बताया
आदमी को भी खुदा बनाया।
छोड़ दे इनका पीछा, वेदों का कहना मान.....
जगत रचा ब्रह्मा कहलाया
विष्णु बन कण–कण में समाया
गणेश, महेश और शिवशंकर
सब हैं एक नहीं कोई अन्तर
गुण कर्मों के कारण उसके, बने अनेक नाम.....
जनम मरण का नहीं है बन्धन
निराकार अजन्मा भगवन
अनन्त अनादि और सनातन
रहता पास हर घड़ी, हर क्षण
सारे जहॉ में उसका, बना हुआ है, मुकाम
नामों ने तुझको उलझाया
एक प्रभु को समझ न पाया
अज्ञानी उसे यहॉ वहॉ ढूंढ़ रहे हैं
जाने क्या–क्या पूज रहे हैं
ढूंढ़ न पायेगें उसे, होगी जीवन की शाम.....
ऊॅच नींच निर्धन धनवान
मजहब से नहीं उसकी पहचान
सब प्राणों में बसा हुआ है
सबका वही एक पिता है
भेदभाव नहीं है उसमें, सबका दाता है एक समान .....
मन मन्दिर उसका ठिकाना
ज्ञानी जन ने ये है माना
वेद, ग्रंथ, शास्त्रों ने भी माना
ज्ञान चक्षु से उसे पहचाना।
जगत का स्वामी निराकार वो, ओ3म् है उसका नाम .....

– प्रकाश आर्य, महू

ज्ञान विज्ञान की खोज और भारतीय विद्वान
जगदीशचन्द्र बोस

प्राणियों में नहीं अपितु वनस्पति में भी जीव है यह सिद्ध करने वाले महान भारतीय वैज्ञानिक जगदीशचन्द्र बोस का जन्म 20 नवम्बर 1858 में ढाका समीप मयमनसिंह नामक नगर में हुआ था। वर्तमान में ढाका बांग्ला देश की राजधानी है।

जगदीशचन्द्र बोस के पिताजी भगवानचन्द्र डेप्युटी मजिस्ट्रेड थे। आपकी माता वामसुन्दरी एक ईश्वर परायण और धार्मिक महिला थी। जगदीशचन्द्र को बचपन से ही पदार्थ विज्ञान के साथ–साथ संस्कृति साहित्य में भी गहन रूचि थी। आपने कोलकाता की सेन्ट जेवियर्स कॉलेज से बी. ए. की परीक्षा पास की थी। उसके बाद आप केम्ब्रिज युनिवर्सिटी में अभ्यास हेतु ईग्लैण्ड गए। वहां से सन् 1884 ई. में बी. एस. सी. की डिग्री प्राप्त की और भौतिक शास्त्र पर कार्य किया।

सन् 1885 ई. में जगदीशचन्द्र कोलकाता की प्रेसिडेंसी कॉलेज में पदार्थ विज्ञान के अध्यापक बने। सन् 1990 ई. में आपने पेरिस में आयोजित पदार्थ वैज्ञानिक के सम्मेलन में भाग लिया।

अपने प्रेसिडेन्सी कॉलेज में अध्ययन कार्य करते हुए एक ऐसा यन्त्र तैयार किया जिसकी सहायता से 2.5 से 0.5 से. मी. के अत्यन्त सूक्ष्म परिमाण के विद्युत तरंगों का निर्माण किया जा सके। आपने इस विद्युत तरंगों का निर्माण किया। आपने इस विद्युत को विद्युतिकरण के उद्‌गम से दूर पकड़ सके ऐसा ग्राहक यन्त्र (रिसीवर) भी तैयार किया। इस यन्त्र की सहायता से बिना तार ही सन्देश भेजना संभव हुआ। इस संशोधन के लिए आपको लन्दन विश्वविद्यालय की डॉक्टर ऑफ साईन्स की पदवी मिली।

जब जगदीशचन्द्र अपनी विद्युत संबंधी शोध कर रहे थे, उसी समय ही आपके मन में विचार आया कि इस संशोधन का प्रयोग वनस्पति पर किया जाए। आपने यह सिद्ध किया कि वनस्पति में भी जीवन होता है और वे भी दुःख या कष्ट दिये जाने पर पीड़ा से छटपटाते हैं। इसके लिए आपने मैग्नेटिक कोस्मोग्राफ नामक यन्त्र को बनाया। विश्व के वैज्ञानिक ने भारतीय दर्शन के इस शाश्वत सत्य को स्वीकार किया कि वनस्पति में भी जीवन होता है।

सन् 1896 ई. में जगदीशचन्द्र बोस ने लिवरपुल में रॉयल इंस्टिट्यूट में वैज्ञानिकों के समक्ष अपने इस नवीनतम अविष्कार पर प्रवचन दिया। सन् 1904 ई. में श्रीमती बुज की अर्जी के आधार पर आपोक पेटेंट का स्वीकृत हुआ।

आप इन सभी यन्त्रों के निर्माणकर्ताओं में अग्रसर थे, जिनके द्वारा आधुनिक युग में फोटो वोल्टेक सेल की सहाय से इलेक्ट्रॉनिक यन्त्रों का निर्माण हो रहा है।

सन् 1920 में आप रॉयल सोसायटी के सदस्य चुने गए। 1922 ई. में लीग ऑफ नेशन्स में आपको अन्तर्राष्ट्रीय आइन्स्टाईन के साथ आपकी भेंट हुई। 1928 ई. में आप विएना में एकेडमी ऑफ साईन्स के विदेश सचिव नियुक्त हुए।

सन् 1902 से 1907 ई. के बीच प्रकाशित हुए आपके मुख्य शोध ग्रंथ हैं – 1. लिविंग एण्ड नोन लिविंग, 2. प्लान्ट रिस्पोन्स, 3. कम्परेटिव इलेक्टो साईकोलॉजी।

डॉ. जगदीशचन्द्र बोस ने अपना जीवन विज्ञान को समर्पित कर दिया। आपने सन् 1917 ई. में "बसु विज्ञान मन्दिर" का निर्माण कराया। सन् 1936 ई. में आपका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। अन्ततः 24 नवम्बर 1936 में भारतमाता के इस महान सपूत को काल के क्रूर हाथों ने हमारे पास से छीन लिया। आपके नाम से भारत आज विश्व में गौरवान्वित है।

धन्य

0 धन्य वे मनुष्य हैं जो अनित्य शरीर और सुख–दुःख आदि के व्यवहार में वर्तमान होकर नित्यधर्म का त्याग कभी नहीं करते।

– संस्कारविधिः, गृहाश्रमप्रकरणम

0 धन्य वह माता है कि जो गर्भाधान लेकर जब तक विद्या पूरी न हो, तब तक सुशीलता का उपदेश करे।

– सत्यार्थ प्रकाश, द्वितीयसमुल्लास

0 वह कुल धन्य, वह सन्तान बड़ा भाग्यवान, जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान हों।

– सत्यार्थ प्रकाश, द्वितीयसमुल्लास

बोधकथा –

सकारात्मक सोच की विजय

"सकारात्मक सोच जीतने का विश्वास प्रदान करती है और जो पूर्ण विश्वास व लगन से कार्य करेगा वो अवश्य ही सफल हो जायेगा।" – **लेखक**

शहर से बहुत दूर एक ऊँची पहाड़ी पर एक गॉव बसा हुआ था। गॉव की जमीन पथरीली व बंजर थी। वहां हैंडपम्प लगाना और कुऑ बनाना संभव नहीं था। उस गॉव के निवासी अत्यन्त गरीब होने के कारण ट्यूबवैल नहीं लगवा सकते थे। उस समय एक गॉव के चार व्यक्ति दूर तालाब से पानी भरकर लाते और निर्धारित दामों पर बेच देते थे। इन लोगों को काम के लिए सुबह जल्दी उठना पड़ता था, तथा दिनभर कठिन मेहनत करनी पड़ती थी।

इसी गॉव का एक व्यक्ति किसी कारण शहर हो कर आया, वहॉ उसने प्लास्टिक की नलकियों द्वारा पानी खींचते हुए देखा था। इससे उसके दिमाग में एक योजना बन गई जिससे गॉव वालों को कम कीमत पर अधिक पानी उपलब्ध कराया जाए। फिर एक दिन उसने प्लास्टिक की नलकियों (पाइपों) द्वारा तालाब से गॉव तक पानी लाने की योजना पूरी करने की ठान ली।

समय गुजरता गया उसने तालाब से गॉव तक जल्दी आने–जाने का छोटा रास्ता ढूँढ़ निकाला और अपने उस खोजे गए रास्ते पर फावड़े से जगह–जगह निशान लगा दिये।

एक दिन वह अपनी सारी जमा–पूँजी लेकर बाजार गया और प्लास्टिक की नलकियॉ खरीद लाया।

दूसरे दिन वह स्वयं ही तालाब पर पहुंचा और उन नलकियों को जमीन के अन्दर बिछाने हेतु तालाब के पास खुदाई का कार्य करना प्रारंभ कर दिया। उसे यह कार्य करते हुए कुछ ही क्षण बीते कि वे चारों व्यक्ति जो पानी बेचने का काम करते थे उस तालाब पर पानी भरने आ पहुँचे। जब उन व्यक्तियों ने उसे वहॉ खुदाई करते देखा तो वे सभी उसके पास गये और उनमें से एक व्यक्ति ने पूछा,–भइया! बहुत दिनों से देख रहा हूँ कि तुम यहॉ से लेकर गॉव तक इधर–उधर फावड़े से निशान लगा रहे थे। अब देख रहा हूँ कि तुम खुदाई भी करने लगे हो। आखिर तुम ऐसा किसलिए कर रहे हो ?

उस व्यक्ति ने नम्रतापूर्वक उत्तर दिया – "भाई साहब मैंने जो फावड़े से निशान लगाये थे, उस रास्ते से मुझे पाइप लाइन बिछानी है, अब खुदाई करके इसमें प्लास्टिक की नलकियों को जोड़कर पाइप लाइन बिछा दूँगा, जिससे इस तालाब का पानी पाइप लाइन के जरिए गॉव तक पहुंचेगा। तब मैं पानी बेचने का

व्यापार करूँगा।

उस व्यक्ति का इतना कहना था, कि वे चारों आदती जोर–जोर से हॅसने लगे, फिर उनमें से एक बोला, "अरे मूर्ख ! ऐसा हो ही नहीं सकता। तेरी प्लास्टिक की नलकियों से पानी गॉव तक कभी नहीं पहुंच पायेगा।"

दूसरे ने कहा – "अरे भइये ! तू मेरी मान तो अभी इन पाइपों को बाजार में जाकर बेच दे, वर्ना कहीं ये गड्ढ़े में पड़ गयी, तो ये सड़ जायेंगी फिर तेरी सारी जमा पूँजी बेकार हो जायेगी।"

तीसरे ने कहा, – "अरे, जब तुझे पानी बेचने का बिजनेस ही करना था। तो हमसे मिल लेता। बेकार में मेहनत कर डाली। चल मेरे साथ में आ जा। देख मैं रोज इस तालाब से बीस बाल्टी पानी ले जाता हूँ और दो रूपये प्रति बाल्टी बेचता हूँ। जिससे मुझे चालीस रूपये रोज आमदनी होती है।

चौथे व्यक्ति ने तीसरे व्यक्ति की हॉ में हॉ मिलाते हुए कहा – "मेरे साथी बिल्कुल सही कह रहे हैं, तेरी भलाई इसी में है कि तूँ हम लोगों की बात मान ले।

इस पर जो व्यक्ति खुदाई कर रहा था, कुछ देर तक सोचता रहा फिर बोला, 'भाई लोगों' जो कुछ आप लोग कह रहे है, वो शायद ठीक हो, परन्तु मुझे पूर्ण यकीन है कि मेरी योजना कामयाब रहेगी। मेरा काम पूरा होते ही इस पाइप लाइन के जरिये पानी जरूर गॉव तक पहुँचेगा।

इस पर चारों एक साथ बोल पड़े, – 'अरे बेवफूफ ! जा किसी डॉक्टर से अपना इलाज करवा ले। तू पागल हो गया है। तू जो सोच रहा है वो काम असम्भव है। तेरी इस पाइप लाइन से पानी नहीं आयेगा और यदि आ गया तो देखेंगे कि तू इन प्लास्टिक के जरिए गॉव तक पानी कैसे ले जायेगा, ऐसा कहकर वो चारों वहॉ से चले गए।

जब वे चारों चले गए तो व्यक्ति पाइप बिछाने के अपने काम में जी जान से जुट गए। समय बीतता गया, अन्ततः पाइप लाइन दिखाने वाले व्यक्ति ने भीड़ के सामने औपचारिक रूप से वाल्व खोल दिया।

कुछ ही देर बाद उस पाइप लाईन से साफ पानी आने लगा। इकत्रित भीड़ में उल्लास छा गया क्योंकि अब उन लोगों को कम पैसों में अधिक पानी मिलने वाला था।

इस कहानी से पता चलता है, कि जब कोई व्यक्ति नया काम करने चलता है, तो समाज उसे रोकता है, टोकता है, उस पर हॅसता है और उसे चिढ़ाता भी है। परन्तु जो इस रूकावटों को भूलकर निरन्तर संघर्ष करता रहता है वह व्यक्ति एक दिन अपने कठिन से कठिन कार्य को अंजाम दे डालता है, अतः हम कह सकते है कि मेहनत और आत्मविश्वास के साथ–साथ सकरात्मक सोच ही रंग लाती है।

उपासना किसकी ?

प्रेष्ठं वो अतिथिँस्तुषे मित्रमिव प्रियम्।
अग्ने रथ न वेद्यम्।। (सामवेद–5)

अर्थ – हे मनुष्यों तुम मित्र के समान हित साधक, अतिप्रिय, निरन्तर रहने वाला हृदय में जो ध्याने योग्य है, जो रथ के समान सबको गन्तव्य तक पहुंचाने वाला एवं स्वयं के प्रकाश से जो प्रकाशित है उसी परमात्मा की स्तुति करो।

मन्त्र में बताया जिसकी स्तुति करना चाहिए, वह जिस प्रकार का हो वह सबका आधार हो, सदैव रहने वाला हो, स्वप्रकाश स्वरूप हो वही हृदय में ध्यान करने योग्य है। ऐसे परमपिता परमात्मा की स्तुति करके ही परम आनन्द को प्राप्त किया जा सकता है। परमात्मा सत्चित् आनन्द अर्थात् सच्चिदानन्द उसके सम्पर्क में आकर ही सच्चे आनन्द की अनुभूति एवं राग, द्वेष भय से निवृत्ति संभव है।

परमात्मा का स्थान अन्य कोई नहीं ले सकता, वह परमात्मा सब प्राणियों में विद्यमान है।

परमात्मा की और सुन्दर व्याख्या ऋषि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज के नियमों एवं उद्देश्यों में बहुत सुन्दर की है जो इस प्रकार है–

"ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।"

इस प्रकार परमात्मा के स्वरूप का चित्रण ऋषि ने वेदादि सत्य शास्त्रों के आधार पर प्रस्तुत किया है।

परमात्मा की उपरोक्त व्याख्या एवं गुण, कर्म, स्वभाव से हटकर यदि हम अनित्य, नाशवान जड़ पदार्थों या मनुष्यों को परमात्मा मानकर ध्यान करेगें तो वह वास्तव में परमात्मा की स्तुति नहीं है अपितु परमात्मा के द्वारा प्रदत्त वस्तु या मनुष्य की स्तुति है। इस प्रकार हम परमात्मा की नहीं परमात्मा की वस्तुओं की स्तुति कर रहे हैं एवं भयवश उसे ही ईश्वर भक्ति समझ रहे हैं। जबकि हमारी श्रद्धा और विश्वास के धर्म ग्रंथ जिनका हमें अनुसरण करना ही

श्रेयष्कर है वे कहते हैं – **"य एक इत् तमुष्टुहि"** अर्थात् वह परमात्मा एक है उसी की भक्ति करनी चाहिए। पुनः उल्लेखित है। **"एक एव नमस्यो वीक्षवीड्यः"** अर्थात् एक परमेश्वर ही पूजा के योग्य है।

अन्धन्तमः प्रविशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते।

ततो भूय इव ते तमो य उ सम्भूत्याꣳरताः।। यजु. 40/9

पाषाण और वृक्षादि अवयव और मनुष्य आदि के शरीर की उपासना जो ब्रह्म के स्थान में करते हैं वे अज्ञानी उस अन्धकार से भी अधिक अन्धकार अर्थात् चिरकाल घोर दुःखरूप नरक में गिर के महाक्लेश भोगते हैं।

आगे तो वेद ने बहुत स्पष्ट कर ज्ञान का मार्ग दिखाया जो उस पर ब्रह्म (जो निराकार, सर्वव्यापक, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है।) हम उसके स्थान पर अन्य की या जड़ की प्रकृति की उपासना करते हैं वे अन्धकार में प्रवेश करते हैं।

आज हमने ईश्वर जो सर्वव्यापक है उसको सीमित कर उसका स्थान निश्चित कर दिया। उसे ढूँढ़ने जगह–जगह घूम रहे हैं। शायद इन्हीं परिस्थितियों में भगवान कृष्ण को कहना पड़ा –

नासतो विद्यते भावो,

ना भावो विद्यते सतः।

अर्थात् : जो जहां नहीं है उसे वहां मानना और जो जहां है उसको न होने का विचार करना दोनों ही भूल है। इसलिए हम केवल उस परब्रह्म की ही स्तुति करें, उसी की शरण में हमें शान्ति मिलेगी। भगवान कृष्ण ने अर्जुन को उपदेश देते हुए कहा **"तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारतः भाव"** हे अर्जुन तू सम्पूर्ण भाव से उस परमात्मा की शरण में जा।

आगे पुनः भगवान कृष्ण ने उपदेश दिया–**ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन् मामनु स्मरन्।** हे अर्जुन तू उस ब्रह्म ओ३म् का ही स्मरण कर।

जपूजी साहिब ने दर्शाया – **एक ओंकार सतिनामु –**

करता पुरखु निरभउ निरवैऊ।

अकाल मूर्ति अजूनी सैभ्य गुर प्रसादि।।

अर्थात् – वह ईश्वर ओ३म् एक है अद्वितिय है, सृष्टि का रचियता है भयव बैर से रहित है नित्य है, जन्म मरण से मुक्त है, उसकी उपासना करो।

ओमित्ये दक्षमुद्गीथा मुपासीत् "छान्दोग्य"

ओ३म् जिसका नाम है और जो कभी नष्ट नहीं होता है उसकी उपासना करनी योग्य है अन्य को नहीं, इसमें एक परमपिता परमात्मा की स्तुति का विधान परमात्मा से भिन्न स्तुति पूजा का निषेध है।

आज विश्व के कई धर्माचार्य मनो वैज्ञानिक, धर्माचार्यों द्वारा किया है इस सत्य को स्वीकार कर चुके हैं कि ओ३म् नाम से शान्ति, ध्यान व ईश्वर के प्रति सुवृत्ति होती है।

इसलिए हम भक्ति में केवल उस परमात्मा की स्तुति ही करें, उसे ही श्रद्धा सुमन अर्पित करें। इस सत्य को अनेक धर्म ग्रन्थ, मजहब पुस्तकों ने भी स्वीकारा है, **एक साधे सब सधे** वाली कहावत सत्य है।

सन्त कबीर ने लिखा –

जो मन लागे एक सो, तो निरवारा जाय।
तूरा दो मुख बाजता, घना तमाचा खाय।।

अर्थात् – इधर उधर मन भटकाने से लाभ नहीं अपितु एक के प्रति श्रद्धा से ही हमारा उद्धार है, हमारी भक्ति भी तभी स्वीकार्य होगी।

अभिमान से दूरी

यदा किंचिज्ज्ञोऽहं द्विप इव मदान्धः समभवम्
तदा सर्वज्ञोऽस्मीत्यभवदवलिप्तं मम मनः।
यदा किंचित्किचिंद् बुधजनसकाशादवगतम्
तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपगतः।।

भावार्थ – जब मुझे कुछ ज्ञान हुआ तो मैं हाथी के समान मदान्ध होकर अपने मन में ज्ञानी होने का गर्व करने लगा और समझने लगा कि मैं सर्वज्ञ हूँ। मेरे जैसा कोई नहीं, लेकिन जब मैं विद्व समाज से, ज्ञानी जनों से, सद् संगति से कुछ–कुछ प्राप्त कर सका या जब मुझे यथार्थ का ज्ञान हुआ, तब मेरा वह मद ज्वर के समान उतर गया और मैंने जाना कि मैं तो निपट मूर्ख हूँ।

वेदों में विज्ञान संकेत –

सूर्य से ऊर्जा की प्राप्ति

सं भानुना यतते सूर्यस्याजुह्वानो घृतपृष्ठः स्वंवाः।
तस्मा अमृध्रा उषसो व्युच्छान्य इन्द्राय सुनवामेत्याह।।

ऋग्वेद 5/37/1

इस शोध की अनन्त सम्भावनाएँ हैं। अब तक के किये गये प्रयास सूर्य से प्राप्त हो सकने वाली ऊर्जा के उपयोग की दिशा में शैशवावस्था में ही है।

भौतिकी – पदार्थ की तीन दशाएँ

त्रीणि त आहुर्दिवि बन्धनानि त्रीण्यप्सु त्रीणयन्तः समुद्रे।
उतेव मे वरूणश्छन्त्स्यर्वन्यत्रा त आहुः परमं जनित्रम्।।

ऋग्वेद 1/163/4

वैसे यह प्रार्थना मन्त्र है – उपमालंकार के रूप में वर्णित है कि अग्नि के कारण पदार्थों के तीन स्वरूप हैं। हे विद्वान, जैसे आपका विद्याजन्म श्रेष्ठ है वैसा मेरा भी हो। इस निवेदन के साथ पदार्थ की तीन दशाओं को दर्शाया गया है और अग्नि कारणी भूत देव है।

स्वतः चलित वाहन यान्त्रिकी

युड्ग्ध्वं ह्यरूषी रथे युड्ग्ध्वं रथेषु रोहितः।
युड्ग्ध्वं हरी अजिरा धुरि बोळहवे वहिष्ठा धुरि बोळहवे।।

– ऋग्वेद 5/56/6

सूत्र रूप में इस मन्त्र में यह दर्शाया गया है कि अग्नि और वायु की संयुक्त शक्ति उत्पन्न की जाए तथा ऐसे संचालित कर शक्ति की अगली धुरी में प्रेषित कर वाहन को गति दी जाए। स्वतः चालित यन्त्रों के लिए यह मूल मन्त्र है और सभी वाहन इसी आधार पर चलते हैं।

सूर्य और पृथ्वी में आकर्षण

सविता यन्त्रैः पृथिवीमरम्णादस्कम्भने सविता द्यामदृहत्।
अश्वमिवाधुक्षद् धुनिमन्तरिक्षमतूर्ते बद्धं सविता समुद्रम्।।

ऋग्वेद 10/149/1

सूर्य रज्जू समान पृथ्वी को बाधता है, अनारम्भ/निराधार आकाश में अपने आस–पास स्थित न टूटने योग्य बंधे हुए, ध्वनि करते हुए घोड़े के समान घुमा रहा है।

क्यों हैं आदमी परेशान!

सुबह से रात्री तक हम अनेक व्यक्तियों से मिलते है, और उससे भी बहुत अधिक संख्या में उन्हें देखते हैं। इस भीड़ में बहुत कम ऐसे मिलेगें जिनके चेहरो पर प्रसन्नता दिखाई दे। अन्यथा प्रायः तनाव, चिन्ता, क्रोध, परेषानी, यही सब चेहरों पर देखने को मिलती है।

ये परेषानियां जीवन का सुख चैन छीन लेती है, जीवन उबाऊ हो जाता है वक्त कटते नहीं कटता है और कुछ के लिए तो यह अभिशाप भी बन जाती है। यदि जीवन ऐसा है तो जीवन को जीने का यह सही तरीका नहीं है। क्योंकि जिस जीवन में सुख, शान्ति, उमंग, उत्साह होता है वही जीवन, जीवन कहलाता है।

परेषानी के कारणों में मुख्य कारण है हमने आज जीवन के भौतिक मापदण्डों को चुना, जीने का साधन मात्र अभाव पद, पैसा, परिवार, प्रतिष्ठा, को ही माना। इन्ही अभाव को दुःख व परेषानियों का कारण मान दुःख, परेषानी की जड़ समझ रहे हैं। किन्तु ऐसा नहीं है, जिनके पास बहुत धन, सम्पत्ती है जिनके अपने अरबों के व्यापार हैं वे भी दुःखी है, चिन्ताओं से घिरे है, अनिन्द्रा, मधुमेह हृदय की बोमारियों के प्रकोप से नारकीय जीवन जी रहे हैं, उनके सामने भी पारीवारिक समस्याएं हैं, धन सुरक्षा का भय है, शासकीय विभागों का चक्कर है इस प्रकार न जाने कितनी समस्याओं ने जीवन को बुरी तरह प्रभावित कर रखा है। इसलिए धन या भौतिक उपलब्धि दुःखों को हटा देगो, यह सोच ठीक नहीं है। यह ध्यान रखना चाहिए कि अपार असंतुलित धन, अनुचित तरीकों से कमाया धन और परेषानियॉ बढ़ाता है।

जिनके परिवार में अच्छी खासी संख्या है भाई बन्धु, पुत्र, पौत्र से भरापुरा परिवार है वे भी दुःखी हैं। जिनके पास प्रतिष्ठा है, पद है, वे भी दुःखी है। जिनका अच्छा स्वास्थ है, बिमारियों से दूर है वे भी परेषान नजर आते हैं। इसलिए इस परेषानी का अन्त मात्र धन, सम्पत्ति पद, पुत्र, पौत्र, परिवार में बसा है यह मानना युक्ति संगत नहीं है।

समझ लेना चाहिए इन परेषानियों का कारण केवल भौतिक अभाव नहीं है तो फिर वे क्या कारण है यह जानना जरूरी है। वैसे तो जिन कारणों से व्यक्ति परेषान रहता है उनकी कोई सीमा नहीं है। किन्तु यह निष्चित मानिए यहां उल्लेखित उन कुछ प्रमुख बातों को अपनाकर भी जीवन की परेषानियों को बहुत कुछ कम कर सकते हैं। आईए कुछ बातों पर विचार करते है। हमारे मानसिक विचार, सुख–दुःख के आधार हैं।

दिल ही बदौलत रंज भी है,
दिल ही की बदौलत राहत भी।
दुनिया जिसे कहते हैं,
वह जन्नत भी है दोजख भी।।

अधिकांष परेषानियों की जड़ हमारे अपने विचार हैं। ये हमारे विचार ही हमारे कार्यों को गति प्रदान करते हैं। विचारों के अनुसार कार्यों को करना या किसी कारणवष चाहते हुए भी न कर पाना एवं करने के पष्चात भी पर्याप्त वांछित परिणाम न प्राप्त होना परेषानियों को जन्म देता है। इसलिए विचार वही करना चाहिए जो हमारी योग्यता, क्षमता, समय, स्थिति के अनुसार हों। आचार्य यास्काचार्य ने मनुष्य को विचारषील होने का सन्देष देते हुए कहा – **"ये मत्वा कर्माणि सीव्यन्ति ते मनुष्याः"** अर्थात् मनुष्य वे ही जो प्रत्येक कार्य को विचार करके करते हैं। यहां विचार से तात्पर्य यथायोग्य होना चाहिए, उचित होना चाहिए, अपनी क्षमता, योग्यता समयानुकूल होना चाहिए। हमारी सोच ही दुःखों को बढ़ा देती है, हमारी सोच ही सुखों का आधार बनती है।

विष्व प्रसिद्ध दार्षनिक, अर्थषास्त्री आचार्य चाणक्य ने परेषानियों से बचने का अमृततुल्य सूत्र हमें दिया। इसे ध्यान देकर समझें तो अनेक परेषानियों का कारण हमें इसमें मिल जावेगा। श्लोक इस प्रकार है :–

कः कालः कानि मित्राणि,
को देशः को व्ययागमौ।
कश्चाहं का च में शक्ति,
ऋतु ध्यायन मुहुर मुहुर।।

प्रत्येक विचार किसी कार्य को प्रेरित करता है, हमें सदा यह ध्यान देना चाहिए कि समय कौन सा है उसके अनुसार ही निर्णय लेना चाहिए। मेरे मित्र कौन हैं, वास्तव में मेरे हितैषी हैं या मुझसे किसी लोभ के कारण मेरे साथ हैं, मैं किस स्थान (देश) में हूँ वहाँ की सभ्यता, रीति रिवाज व स्थिति क्या है उसका भी सारा ध्यान रखकर, मेरी आय क्या है मेरा व्यय कितना है कहीं आय से अधिक व्यय तो नहीं हैं, यह स्थिति भी परेशानी का कारण बनती हैं मैं क्या हूँ, मेरी शक्ति क्या है, अपने को वास्तविक आधार पर जानना व वैसा करना चाहिए। उपरोक्त बातों को जो विचार करके आचरण करते हैं वे चिन्ता से मुक्त होते हैं।

वर्तमान के महत्व को समझना चाहिए, कुछ व्यक्ति वर्तमान में नहीं जीते, उनकी सबसे बड़ी समस्या यह होती है कि जो कल बीत गया और जो कल आने वाला है उसको वे वर्तमान से अधिक महत्व देते हैं।

कल जो बीत गया उसमें जो होना था वह हो चुका, उसके परिणाम को अब हम बदल नहीं सकते, जो नुकसान हो गया उसकी भरपाई नहीं हो सकती, हमारे साथ जो दुर्घटना हो चुकी, जिसका फल हमें भोगना था वह भोग चुके। इन सबको केवल याद करके घटनाओं को ताजा बनाते हैं। इनके

अतीत में इतने डूब जाते हैं और इस कारण कि वर्तमान का ध्यान ही नहीं रहता। बीते हुए कल के प्रभाव में जो वर्तमान हमारे हाथ में है उसको नजर अन्दाज करके इसमें जो खुशियॉ ला सकते थे, उसके स्थान पर बीते हुए कल के परिणामों से ही चिन्तित रहते हैं।

इसी प्रकार जो कल आने वाला है उसके प्रति ही आशान्वित रहना, असुरक्षा भाव से उसी ओर पूरा ध्यान देकर उसके बारे में अनुमान की दुनियां में खोकर हम वर्तमान की उपेक्षा करते हैं। इससे वर्तमान की उपलब्धियों को छोड़कर जो प्राप्त है, उसे छोड़कर, आगे आने वाला है जिसकी अभी निश्चितता नहीं है उसे बहुत अधिक महत्व देना भी परेशानियों का कारण है।

इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि हम अतीत और भविष्य को बिलकुल अनदेखा कर दे। अतीत सीखने के लिए व भविष्य जीवन योजना के लिए जरूरी है किन्तु हमारे हाथ में जो हैं उसका महत्व कम करके और जो अब हमारे पास नहीं रहा या जो अभी आया नहीं है उसकी चिन्ता या खयाली पुलावों में उलझकर उसे विशेष महत्व देना परेशानियों का कारण है। इसलिए वर्तमान को संभालो, भविष्य स्वतः संभलेगा।

— प्रकाश आर्य, महू

जरा सोचें, संभले और करें।

इतने नरम मत बनो कि लोग तुम्हें खा जायें।
इतने गरम मत बनो कि लोग तुम्हें छू भी न सकें।

इतने सरल मत बनो कि लोग तुम्हें मूर्ख बना दें।
इतने जटिल मत बनो कि लोग तुम्हें मिल न सकें।।

इतने गम्भीर मत बनो कि लोग तुमसे ऊब जायें।
इतने छिछले मत बनो कि लोग तुम्हें माने ही नहीं।।

इतने महंगे मत बनो कि लोग तुम्हें बुला न सके।
इतने सस्ते भी मत बनो कि लोग तुम्हें नचाते रहें।।

आपके एक पल का क्रोध आपका भविष्य बिगाड़ सकता है।
आपके एक पल का सत्संग भविष्य बना सकता है।।

सत्य

सच बोलने का सबसे बड़ा फायदा है, उसे याद नहीं रखना पड़ता।

संकलन — स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती

"वेद सुधा"

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना, सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

– महर्षि दयानन्द सरस्वती

यजुर्वेद अध्याय 16 में 'रूद्र' शब्द को विस्तारपूर्वक समझाया गया है। 'रूद्रदेव' के विभिन्न रूपों का वर्णन है उन्हीं में से यहां कुछ अंश प्रस्तुत किया जाता है। रूद्र अनेक हैं यह द्यौ अन्तरिक्ष तथा पृथ्वी पर विद्यमान हैं यजुर्वेद का यह अध्याय रूद्र अध्याय कहलाता है।

"असंख्याता सहस्त्राणि ये रूद्राऽधि भूम्याम्।" यजु. 16/54

"अस्मिन् महत्यर्णवेऽन्तरिक्षे भवाऽधि" यजु. 16/55

इन रूद्रो के दो रूप हैं – 1. इनका जो कल्याणकारी रूप है, वह शिव कहलाता है। 2. और यही विनाशकारी रूप में रूद्र बन जाते हैं। इस त्रिगुणात्मक प्रकृति से उत्पन्न अर्थात इस सृष्टि का प्रत्येक पदार्थ शिव और रूद्र है। सृष्टि रचयिता ईश्वर के भी यह नाम हैं किन्तु प्राकृतिक पदार्थों के भी है। जब मनुष्य सृष्टि के प्रत्येक पदार्थ को ज्ञानपूर्वक समुचित रूप से उपयोग में लेता है तो वह रूप शिव हो जाता है, उसके लिए कल्याणकारी हो जाता है। किन्तु जब मनुष्य अज्ञान, अविद्या में फंसकर आसक्ति पूर्वक अनुचित अर्थात दुरूपयोग करता है तब वही पदार्थ रूद्र रूप से उसके लिए विनाशकारी हो जाता है।

ओ3म् नमस्ते रूद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः।।

– यजुर्वेद 19/1

अर्थ – हे शत्रुओं को रूलाने वाले, रोगों को नष्ट करने वाले, दुर्गुणों, पापवृत्तियों को भस्म करने वाले प्रभो। आपको हमारा नमस्कार हो।

जैसे – पहले कहा है कि रूद्र असंख्य हैं ईश्वर, राजा, वायु, औषधि, वृक्ष, वैद्य, ऋषि, अर्थात् वैज्ञानिक आदि मन्त्र में असंख्यों पदार्थों का नाम रूद्र बताया है।

यहां पर केवल हम इस सर्वनियन्ता सर्वशक्तिमान ईश्वर का ही ग्रहण करते हैं जब हम कल्याण पथ पर चलते हुए आत्म चिन्तन करते हैं, प्रभु का ध्यान करते हैं। उस समय हमारे अन्दर जो उत्साह होता है, जो साहस की अनुभूति होती है तथा जो शक्ति मिलती है। वह ईश्वर की 'शिव' रूप शक्ति है उसी के माध्यम से मनुष्य मोक्ष मार्ग में गमन करता हुआ यात्रा पूरी कर पाता है अर्थात् शिवलोक (मुक्ति) में पहुंच जाता है।

और जब व्यक्ति रोग, शोक व्यसनों तथा वासना, काम, क्रोध आदि शत्रुओं के बीच घिर जाता है, जब मुसीबतों के समुद्र में डूबने लगता है। ऐसी स्थिति में सगे संबंधी, रिश्तेदार व सभी मित्र आदि जब मुंह मोड़ लेते हैं तब व्यक्ति कातर

दृष्टि से प्रभु की ओर निहारता है, ध्यान करता है। इस समय जो वैराग्य होता है विषयों के प्रति अनासक्ति हो जाती है, व्यसनों, दुर्गुणों का नाश हो जाता है। यह ईश्वरीय 'रूद्र' शक्ति के माध्यम से होता है और रूद्र शक्ति की सहायता से मनुष्य सब प्रकार की पाप वृत्तियों पर विजय पाकर विजेता बन जाता है। अपनी दुर्बलताओं का नाश करके आत्मबल प्राप्त कर लेता है। तब उस प्रभु 'रूद्र' की सहायता और सुरक्षा में चक्रवर्ती सम्राट के समान व्यक्ति स्वाभिमान से प्रकाशमान हो जाता है। कोई भी आसुरी शक्ति तिरछी नजर से देखने का साहस नहीं कर सकती। इसलिए हम सब प्रभु का ही आश्रय लेवें।

सुरेशचन्द्र शास्त्री
उपदेशक
म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल

वेद सनातन हैं – वही हमारे ज्ञान चक्षु ह।

वेद ईश्वर का ज्ञान होने से सनातन है – सनातन का संबंध किसी जाति, सम्प्रदाय, देश से नहीं है जो सदा के लिए है अर्थात् पहले भी था और आगे भी हमेशा रहेगा, जिसका न आदि है न अन्त है, वह सनातन है। इस वर्तमान सृष्टि को बने 1 अरब 96 करोड़ 8 लाख 53 हजार 116 वर्ष हो गए, तभी से मानव की उत्पत्ति हुई। धर्म पालन ही मनुष्यता की पहचान है। यहां विचार करें कि इतने वर्ष पूर्व कौन–सा धर्म था, जिसे हमारे पूर्वज मानते थे। जबकि जितने मत–मतान्तर जो धर्म माने जा रहे हैं उनकी मान्यता और ग्रंथ कोई 500 वर्ष, कोई 1400, कोई 2100, कोई 2500, कोई 4000, कोई 5000 वर्ष में पैदा हुए तो पहले कौन सा ज्ञान था, रामायण, गीता, महाभारत, पुराण, जैन, बौद्ध, पारसी, ईसाई, इस्लाम इस विचारधारा के ग्रंथ सृष्टि के प्रारंभ से नहीं थे, बाद में अलग–अलग समयों में आते गए। **ये सारी विचारधाराएं नूतन हो सकती हैं, पुरातन हो सकती हैं परन्तु सनातन नहीं हो सकती** ! इस दृष्टि से विचार करने पर तथा अनेक प्रमाणों से वह ज्ञान केवल उसी का हो सकता है जो स्वयं सनातन है, जो सदा से था और सदा रहेगा। ऐसा ज्ञान केवल ईश्वर का ही हो सकता है, जो वेद है।

सनातन का अर्थ है, जो सदैव रहता है। न जिसका जन्म होता है, न जिसका अन्त होता है। ईश्वर, जीव व प्रकृति, सनातन सत्ता हैं यह सनातन धर्म की मान्यता है।

सूचना

1. मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रान्तीय अधिवेशन 11, 12, 13 फरवरी 2018 को संभवतः भोपाल में किया जाना निश्चित हुआ है। इसमें प्रत्येक आर्य समाज व आर्य सदस्यों, सभासदों, पदाधिकारियों व पुरोहितों तथा समाज के अन्तर्गत संचालित विद्यालयों के स्टॉफ और बड़ी कक्षाओं के विद्यार्थियों का उपस्थित होना नितान्त आवश्यक है। कार्यक्रम आर्य समाज की प्रदेश में गरिमा बढ़ाने की दृष्टि से किया जा रहा है। आज छोटे छोटे से संगठनों की ओर शासन और समाज आकर्षित हो रहा है, इसका मुख्य कारण है वहॉ उन्हें संख्या और संगठन दिखाई देता है। इस भावना से आर्य समाज का प्रान्त में एक विशाल एवं प्रभावी आयोजन किए जाने का निर्णय अन्तरंग सभा ने लिया है। सफल कार्यक्रम का प्रभाव प्रत्येक आर्य समाज और आर्यजनों के सहयोग से ही संभव होगा।

   अतः कृपया सम्मेलन तिथी को अभी से आप ध्यान में रखते हुए आने हेतु समय निर्धारित करें, साथ ही इसकी सूचना प्रत्येक आर्य परिवार में और अपने ईष्ट मित्रों तक अवश्य पहुॅचावें। निम्न पतों पर यथा संभव इसकी जानकारी भी भेजें कि आपके यहॉ से कितने व्यक्ति सम्मिलित हो रहे हैं।

   दूसरा आग्रह यह भी है कि सम्मेलन तिथी में कम से कम एक सप्ताह पूर्व और एक सप्ताह बाद तक कोई बड़ा कार्यक्रम अपनी समाज में आयोजित न करें। यह इसलिए लिखा जा रहा है ताकि आपकी पूरी शक्ति केवल–केवल सभा के इस अभूतपूर्व होने वाले कार्यक्रम में ही लग सके, ताकि सबके प्रयास से यह कार्य एक ऐतिहासिक बन जावें।

   कार्यक्रम में देश–विदेश से भी बड़ी संख्या में उपस्थिति होगी। इसलिए यह एक दृष्टि से राष्ट्रीय कार्यक्रम के समकक्ष ही कार्यक्रम हो जावेगा, किन्तु आप सबके सहयोग से।

2. **आर्य युवा एवं युवती संगठन सम्मेलन का आयोजन** – प्रान्त के आर्य परिवारों के युवक एवं युवती सम्मेलन का आयोजन माह अगस्त में किया जाना निश्चित है, जिसमें आर्य समाज की शक्ति वृद्धि में युवाओं का पूर्ण योगदान, सहयोग तथा आर्य समाज के लिए उनके विचारों पर विशेष चर्चा कर निर्णय लिया जावेगा।

अतः अपनी आर्य समाज व परिवार के युवा–युवतियों के नाम जिनकी आयु 20 से 45 वर्ष तक है। कृपया निम्न पते पर उनके नाम, मोबाईल या दूरभाष सम्पर्क नम्बर, पता सहित भेजें ताकि उन्हें विषय देकर उनके सुझाव आमन्त्रित किए जा सके। इस हेतु **श्री समीर गॉधी** "संयोजक–युवा संगठन" (मो. 9425137097, पता–गॉधी पेट्रोल पम्प, ए. बी. रोड, शिवपुरी) को या महू कार्यालय के पते पर सूचित करें।

इसी प्रकार ग्राम चिप्या जिला आगर से एक बालिका को गुरूकुल पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी में अध्ययन हेतु भेजा है, जो आर्थिक रूप से कमजोर है। सभा द्वारा प्रतिवर्ष बेटी की पढ़ाई के लिए 15000/– रू. तथा भविष्य में जब तक गुरूकुल की पढ़ाई करना चाहे। सभा का सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

इसी तारतम्य में गोसपुरा 1000/–, लोहामण्डी 3000/– और आर्य समाज मुरैना की सदस्या बहन श्रीमती नीता गुप्ता ने क्रमशः 5000 रू. प्रति वर्ष सहयोग देने की घोषणा की।

इस अवसर पर सभा की ओर से गुरूकुल में जो भी विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, यदि उनकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है, इस प्रकार अपने बच्चों की पढ़ाई हेतु सहयोग चाहते हैं तो सभा उन्हें यथायोग्य सहयोग प्रदान करेगी।

प्रिय पाठकवृन्द,

वैदिक रवि आपका अपना, अपनी सभा का पत्र है। प्रयास किया जा रहा है कि यह अत्यन्त रोचक, ज्ञानवर्धक पत्रिका बनें। हमारी अपनी बात उन लोगों तक भी पहुंचना चाहिए जो वैदिक विचारों से दूर हैं। इसी भावना से पत्रिका सम्पादन किया जा रहा है जिसे प्रत्येक व्यक्ति पढ़े और इसे पसन्द करे। इसके अधिक से अधिक पाठक हो सकें, इसलिए वैदिक रवि के ग्राहक संख्या बढ़ाने में सहयोगी बनें, अपने परिवार, मित्रों, सगे संबंधियों को इसके ग्राहक बनाइए।

विशेष–बार–बार निवेदन किया जा रहा है कि पत्रिका का और अच्छा स्तर बनें। इस हेतु अपने या स्थापित विद्वानों के लेख, विचार, कविता, समाचार महू के पते पर प्रेषित करें। कृपया इस ओर ध्यान देवें।

अन्तर्वेलिया भवन सभा को हस्तांतरित

अन्तर्वेलिया के संबंध में सभामन्त्रीजी द्वारा समस्त जानकारी देते हुए बताया कि ईसाई मिशनरी अन्तर्वेलिया में स्थित आश्रम को किसी प्रकार बन्द करवाना चाहती है। उनके द्वारा कई बार ऐसा प्रयत्न किया गया। इस बार उन्होंने प्रमुख कार्यकर्ता आर्येन्द्र वैदिक को एक षड़यन्त्र रचकर फौजदारी मुकदमें में फंसा दिया हैं कई दिनों तक उन्हें जेल में रहना पड़ा। इसी बीच उनकी युवा बेटी की भी हत्या हो गई, उनके परिवार पर अभी भी खतरा मण्डरा रहा है। आर्येन्द्र व परिवार सब छोड़कर जाना चाहते थे।

इस स्थिति में वहां दो तीन बार जाकर आसपास के व्यक्तियों को इकट्ठा कर संगठन मजबूत करने तथा आश्रम सहयोगी तैयार करने की भावना से गया। अब वहां सत्संग होने लगा एक खाना बनाने वाली महिला तथा एक चौकीदार की नियुक्ति।

– वहां जाकर उनसे सभा की ओर से प्रस्ताव रखा कि यदि वे आश्रम सभा को अन्तरित कर दें तो सभा इसके संचालन को अपने हाथ में ले सकती है।

– आश्रम की साधारण सभा में भूमि स्वामी मनीषा वैदिक भी उपस्थित थीं उन्होंने तथा पूरे परिवार ने आश्रम का स्वामित्व सभा को सौंपने की स्वीकृति दी सभा की कार्यवाही में इसका उल्लेख किया।

इस स्थान को किसी भी स्थिति में छोड़ना ईसाईयत के कार्यों को खुली छूट देना होगा। इसलिए इस आश्रम को सभा द्वारा प्राप्त कर लेना चाहिए तथा उसका व्यय तथा आर्येन्द्र पर लगे प्रकरण में पूर्ण सहयोग जिसमें आर्थिक सहयोग भी है वह सभा द्वारा करना चाहिए।

– सर्वानुमति से निर्णय लिया गया कि अन्तर्वेलिया आश्रम का सभा को वैधानिक रूप से अधिग्रहण कर लेना चाहिए। इस संबंध में संभाग के उप प्रधान, उपमन्त्री तथा ,सभा के भू–सम्पत्ती अधि ठाता योग्य कार्यवाही करके स्थान सभा के नाम पर करवाने की प्रकिया प्रारंभ करें। इसका जो भी व्यय हो, वह सभा द्वारा किया जावें।

आर्येन्द्र के संबंध में जो प्रकरण दर्ज हुआ है, उसकी सहायतार्थ सभा द्वारा पूर्ण सहयोग दिया जावेगा।

आर्येन्द्र पूर्व में इस सभा में कार्य कर चुके हैं सभा में उनकी सेवा पुनः सभा में प्राप्त हो रही है।

सभा पदाधिकारियों के द्वारा अनेक आर्य समाजों का सघन दौरा और बैठकें

प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य, श्री गोविन्द आर्य, श्री आर्य राधेश्याम बियाणी, श्री दक्षदेव गौड़ के द्वारा आर्य समाज मल्हारगंज, आर्य समाज देवास, आर्य समाज गुना में पूर्व सूचनानुसार आर्य समाजों का निरीक्षण किया गया। इसके पश्चात शिवपुरी, नया बाजार, मुरार, लोहामण्डी तथा चित्रगुप्तगंज का दौरा किया, जिसमें उपरोक्त कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त सभाप्रधान श्री इन्द्रप्रकाशजी गांधी भी रहे। ग्वालियर क्षेत्र के संभागीय उपप्रधान श्री परमालसिंह कुशवाह, उपमन्त्री श्री जैमिनी गोयल, उपप्रधान श्री मानसिंह आर्य व अनेक कार्यकर्ता आर्य समाज में सभा पदाधिकारियों के साथ पहुंचे। स्थानीय सदस्यों से संगठन संबंधी चर्चा की। कार्यकर्ताओं में इसका अच्छा प्रभाव रहा।

सभी स्थान पर बड़ी मात्रा में आर्य समाज सदस्यों की उपस्थिति रही। सभा की ओर से आर्य समाज की गति बढ़ाने के लिए, संगठन को मजबूत करने के लिए तथा समस्त सनातन धर्मियों को जोड़ने संबंधी चर्चा की गई, प्रत्येक स्थान पर उत्साह व नवचेतना का प्रवाह हुआ। कार्यकर्ताओं ने सभा के इस प्रयास को सराहते हुए समाज के सभी पदाधिकारियों ने व सदस्यों ने संगठन में और सक्रियता से सहयोग का आश्वासन दिया।

श्री श्रीधर शर्मा कार्यकारी उपप्रधान गुना संभाग तथा श्री जितेन्द्रपाल सिंह बैस आर्य समाज नया बाजार को विशेष आमन्त्रित सदस्य के रूप में मनोनीत किया गया।

विगत कुछ दिनों से गुना संभाग के संभागीय उपप्रधान श्री रामपाल सोनी अपने पारिवारिक व अन्यान्य कारणों से स्थायी रूप से भोपाल चले गये हैं। और इस कारण गुना संभाग, के कार्यों में अवरोध व शिथिलता न हो इसलिए सभा प्रधान श्री इन्द्रप्रकाश जी गांधी के सुझाव पर संभाग के प्रमुख कार्यकर्ताओं व पदाधिकारियों तथा अन्तरंग सदस्यों से विचार विमर्श कर श्री श्रीधर शर्मा का अस्थायी रूप से कार्यकारी प्रधान के रूप में मनोनयन किया गया।

इसी प्रकार आर्य समाज नया बाजार के सक्रिय कार्यकर्ता श्री जितेन्द्रपालसिंह बैस को स्थायी रूप से अन्तरंग सदस्य के रूप में विशेष आमन्त्रित के रूप में मनोनयन किया गया।

उपरोक्त दोनों नामों का उपस्थित सदस्यों ने करतल ध्वनि से स्वागत किया।

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेवजी जन–जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए आस्था–भजन चैनल पर प्रतिदिन सायं 7 से 9 बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकार्डिंग यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकार्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था–भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों आस्था–भजन (चैनल) पर प्रतिदिन सायं 7 से 7.20 बजे तक आचार्य धर्मवीर जी के वेद–प्रवचन, 7.30 से 7.50 तक स्वामी विष्वङ् जी के योग दर्शन प्रवचन, 8.30 से 8.50 तक आचार्य सत्यजीत जी के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था–भजन' (चैनल) डिश–टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा स्काई, वीडियोकॉन, बिग–टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार–बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगे। ऐसा करके वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

वेद मन्त्र में कहा गया –

"स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त।। यजु. 32।10।

अर्थ – हे मनुष्यों ! वह परमात्मा अपने लोगों का भ्राता के समान सुखदायक सकल जगत का उत्पादक वह सब कामों का पूर्ण करने हारा सम्पूर्ण लोक मात्र और नाम, स्थान, जन्मों को जानता है और जिस सांसरिक सुख दुःख से रहित नित्यानन्दयुक्त मोक्ष स्वरूप धारण करने हारे परमात्मा में मोक्ष को प्राप्त होके विद्वान लोग स्वेच्छापूर्वक विचरते हैं वही परमात्मा अपना गुरू, आचार्य, राजा और न्यायाधीश है, अपने लोग मिलके सदा उसकी भक्ति किया करें।

प्रांतीय सभा से प्रचार हेतु पुस्तकें व स्टीकर प्राप्त करें

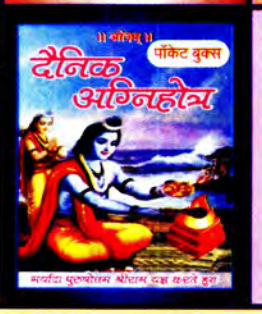

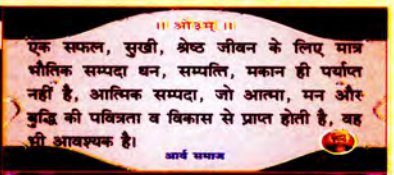

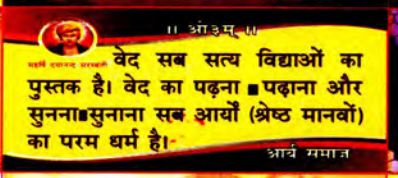

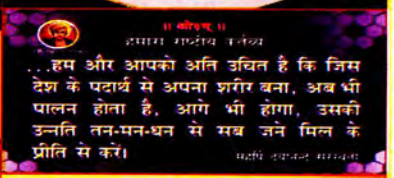

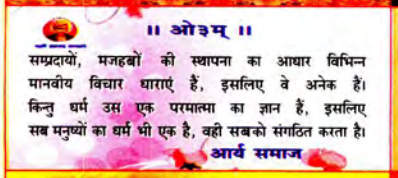

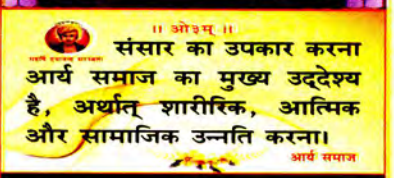

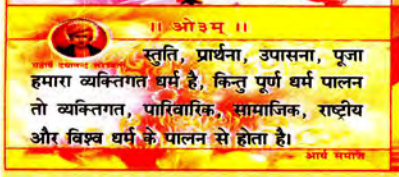

मानव कल्याणार्थ

आर्य समाज के दस नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2015-17

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा

तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा कौशल प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित कराकर
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक – प्रकाश आर्य, महू

ISSN # 98262-71062